श्री नेमिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री नेमिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री नेमिनाथ विधान

जय बोलिये
करुणा के धारी,
मोक्ष के विहारी,
मुक्ति के निहारी,
धर्माधिकारी,
परम संन्यासधारी,
प्राणियों के हितकारी,
राज रमा राजुल के त्यागी,
परम वैरागी, मुक्ति रागी,
जगत् प्रसिद्ध, गिरनार से सिद्ध
परमपूज्य
श्री नेमिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : जब से गुरु दर्श मिला.....)

जब से नेमिनाथ मिले, भक्त कमल खिले-खिले ॥[2]
हमको तो पनाह मिल गयी रेऽऽऽऽऽ।
जिंदगी की राह मिल गयी रे।

1.

तुम ही तो हमारे चारों धाम हो-
तुम ही तो हमारे जाप ध्यान हो।[2]
रोम-रोम में उलास- जब से बने भक्त खास[2]
हमको तो पनाह....

2.

तुम ही तो हमारे तत्त्व पूज्य हो-
तुम ही तो हमारे सिद्ध साध्य हो।
भक्ति भाव से पुकार-, जब से की है बार-बार[2]
हमको तो पनाह....

3.

तुम ही रहे सत्य शिवं सुन्दरम्-
तुम ही साँचे जिन धरम हो मन्दिरम्॥
प्राण-प्राण है निहाल-, बदली अपनी चाल ढाल[2]
हमको तो पनाह....

4.

तुम ही तो हमारे मोक्ष धाम हो-
तुम ही तो हमारी ओर ध्यान दो।
कौन आप बिन हमार- 'सुव्रत' आए खोज द्वार[2]
हमको तो पनाह....

श्री नेमिनाथ विधान

स्थापना

निज निर्ग्रंथ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके....)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतरयामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जायें, पर सुखी रहे दुनियाँ॥
फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्ष महल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥
अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चन्दन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥
अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥
अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥
अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥

अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥
अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥
अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया.....।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥
फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आये।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आये॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ.....)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोस्तु स्वामी॥
जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[2]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ, सर्व कल्याणी।

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[2]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ, सर्व कल्याणी....

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बंधन।[2]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ, सर्व कल्याणी....

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बंधन टूटे।[2]
फिर समवसरण में, दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ, सर्व कल्याणी....

शुक्ला एकम् क्वार को, घाति कर्म जयोस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[2]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ, सर्व कल्याणी....
आठें शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु, गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

धार्मिक रथ की जो धुरी, धर्म चक्र की हाल।
जिनवर नेमि दयेश की, अब कहते जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे॥ 1॥

अतः करें गुणगान भक्त हम, आश्रय ले जयमाला का।
जो पिछले भव अपराजित थे, ऐसे प्रभु जग-पाला का॥
अपराजित कर मृत्यु महोत्सव, सोलहवे सुर जन्म लिए।
स्वर्ग त्यागकर सुप्रतिष्ठ बनकर, उल्कापातन देख लिए॥ 2॥

धर वैराग्य लिए दीक्षा फिर, तीर्थंकर प्रकृति पाये।
समाधिमरण कर स्वर्ग गए फिर, स्वर्ग त्याग भू पर आये॥
शिवदेवी को सोलह सपने, दिए गर्भ कल्याणक में।
ऐरावत से चले मेरु पर, प्रभो! जन्म कल्याणक में॥ 3॥

धर्म चक्र की धुरा धरी सो, नेमिनाथ शुभ नाम पड़ा।
जिन्हें देख आनन्द बरसता, विश्व जोड़कर हाथ खड़ा॥

बचपन बीता अणुव्रत जैसा, फिर जिन पर यौवन छाया।
तभी मनोहर जलक्रीड़ा का, एक सुखद अवसर आया॥ 4॥

वहाँ सत्यभामा के ऊपर, नेमिनाथ जल उछलाये।
वस्त्र नहाने का तुम धो दो, यूँ कहकर कुछ इठलाये॥
क्या तुम काम श्याम के जैसे, कर सकते भामा बोली।
अगर नहीं तो हुक्म करो क्यों?, ये बोली बन गई गोली॥ 5॥

नेमिनाथ ने शंख फूँककर, नवयौवन की ध्वनि कर दी।
राजीमति से विवाह बंधन, करने को मँगनी कर ली॥
तभी श्याम को हुई आशंका, कहीं कभी ना हो ऐसा।
नेमिनाथ जी राज्य हमारा, ले ना लें तो हो कैसा॥ 6॥

अतः उन्हें वैराग्य कराने, को षड्यन्त्र रचा डाले।
मृग पशुओं को शिकारियों को, बाड़ी में भरवा डाले॥
जूनागढ़ बारात गयी तो, नेमि उन्हीं का दुख देखे।
धर वैराग्य तजे राजुल को, विवाह बंधन भी फेंके॥ 7॥

चले देवकुरु शिविका से ली, गिरिनारी में मुनिदीक्षा।
पीछे - पीछे राजुल पहुँची, बनी आर्यिका ली दीक्षा॥
द्वारावति के जो राजा थे, श्री वरदत्त महा न्यारे।
वहीं पारणा दीक्षा की हुई, पंचाश्चर्य हुए प्यारे॥ 8॥

छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥
ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥ 9॥

भव्यजनों के नेमिनाथ ने, कहे भवांतर जैसे ही।
सभी पाण्डवों ने दीक्षा ले, धारा संयम वैसे ही॥
कुन्ती सुभद्रा और द्रौपदी, बनी आर्यिका सुर-वासी।
विहार करते शत्रुंजय पर, पाण्डव पहुँचे संन्यासी॥ 10॥

दुर्योधन के भांजे ने फिर, वहाँ घोर उपसर्ग किए।
दो पाण्डव तो स्वर्ग सिधारे, तीन मोक्ष को गमन किए॥
इधर नेमिप्रभु गिरिनारी पर, योग निरोध किए स्वामी।
कर्मनष्ट कर मोक्ष पधारे, हम चरणों में प्रणमामि॥ 11॥

ब्रह्मदत्त, भी जरासंध भी, पद्म कृष्ण भी तब जन्मे।
तब ही हुआ महाभारत था, नेमिनाथ के शासन में॥
द्वन्द-फन्द हर्त्ता को बाँधो, गुरु दिन राहु-ग्रह में क्यों।
रिद्धि-सिद्धि हों काम बनें सब, प्रभु की जय बस बोलो तो॥

सजा-धजा था विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर हुए।
सजे बराती, शोभे दुल्हन, नेमि सभी से दूर हुए॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥ 13॥

(सोरठा)

चरण शरण में शंख, नेमिनाथ का चिह्न है।
मिले भक्ति के पंख, उड़कर भक्त प्रसन्न हैं॥
परम शुद्ध अध्यात्म, लोक शिखर शिवधाम है।
नेमिनाथ दो दान, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं....)

विधान अर्घ्यावली

(बाईस-परिषह) (विष्णु)

तुम्हीं जिनालय तुम सिद्धालय, आतम तीरथ हो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥

मिले न भोजन अल्प मिले तो, क्षुधा वेदना हो।
फिर भी अयोग्य करें न भोजन, आत्म साधना को॥
क्षुधा विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 1॥

ॐ ह्रीं क्षुधाजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

असमय में यदि प्राण विदारक, लगे प्यास तो भी।
पियें न जल लेकिन जो पीते, आत्म ध्यान जल ही॥
तृषा विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 2॥

ॐ ह्रीं तृषाजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शीत लहर में खुली डगर में, रहें दिगम्बर जो।
फिर भी डरें न भागे ओढ़े, आतम कम्बल को॥
शीत विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 3॥

ॐ ह्रीं शीतजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

महा ग्रीष्म में लू-लपटों में, तालु कण्ठ सूखे।
देह-विदारक दाह सहें पर, संयम ना छूटे॥
उष्ण विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 4॥

ॐ ह्रीं उष्णजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मच्छर आदिक जो दें पीड़ा, सहन करें उनको।
पर निर्वाण प्राप्ति के इच्छुक, कष्ट न दें उनको॥

दंशमशक जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 5॥

ॐ ह्रीं दंशमशक खटमल चींटी बिच्छू आदिक जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

यथाजात बालक के जैसा, जिनका रूप रहा।
दोष रहित निर्वाण प्राप्ति को, ब्रह्म स्वरूप कहा॥
धरें नग्नता बनें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 6॥

ॐ ह्रीं नग्नताजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पञ्चेन्द्री के शुभ-विषयों से, जिनने मुख मोड़ा।
जीव दया के परिपालन को, अपना सुख छोड़ा॥
अरति विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 7॥

ॐ ह्रीं अरतिजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ब्रह्म विनाशक अगर नारियाँ, हाव-भाव कर लें।
कछुये सम मन-विकार जयकर, निज में संत रमें॥
स्त्री विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 8॥

ॐ ह्रीं स्त्रीबाधाजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर-पात्री बन पग-यात्री बन, गमनागमन करें।
लेकिन कण्कड़ काँटों में भी, पीड़ा सहन करें॥
चर्या जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 9॥

ॐ ह्रीं चर्या आहारबाधा जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निर्जन क्षेत्र गुफादिक में जो, आसन ध्यान करें।
भय उपसर्ग विजेता पथ से, कहाँ प्रयाण करें॥

विजय निषद्या करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 10॥

ॐ ह्रीं निषद्या घुटिका कटि आसनबाधा जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भले थके हों लेकिन विधिवत्, करवट से सोते।
ज्ञान ध्यान में लीन रहें पर, दुखी नहीं होते॥
शय्या जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 11॥

ॐ ह्रीं शय्या निद्राबाधा जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कटु-वचनों को सुनकर भी जो, क्रोध नहीं करते।
तपश्चरण में तत्पर रहकर, पाप-ताप हरते॥
विजय करें आक्रोश आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 12॥

ॐ ह्रीं आक्रोश क्रोध आवेश जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अस्त्रों-शस्त्रों की पीड़ा दे, जब कोई मारें।
तो भी चन्दन जैसे महकें, रत्नत्रय धारें॥
हम भी वध जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 13॥

ॐ ह्रीं वध अस्त्र शस्त्रप्रहार जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तप करके जो सूख चुके पर, दीन-हीन ना हों।
पथ न भटकें, कुछ नहिं माँगे, प्राण कण्ठगत हों॥
विजय याचना करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 14॥

ॐ ह्रीं याचना जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बहुत दिनों तक मिले न भिक्षा, तो भी दुख न करें।
करें तपस्या हरें समस्या, आतम मनन करें॥

अलाभ जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 15॥

ॐ ह्रीं अलाभ जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्मोदय से रोग जन्म लें, फिर भी नहीं दुखी।
प्रतीकार तो कर सकते पर, निज में रहे सुखी॥
रोग विजय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 16॥

ॐ ह्रीं रोग जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कंकड़ काँटे चुभने पर भी, मिलें चेतना से।
विजय निषद्या चर्या शय्या, करें साधना से॥
तृणस्पर्श जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 17॥

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श शूल कण्टकादि जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

स्नान त्याग है अतः धूल से हुई खाज खुजली।
वो चारित्र नीर से धोकर, आतम हो उजली॥
हम भी मल जय करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 18॥

ॐ ह्रीं मलजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञानी ध्यानी बनने पर भी, मिलता आदर ना।
तो भी खेद-खिन्न ना हों यदि, मिले बड़प्पन ना॥
जय सत्कार-पुरस्कार करें हम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 19॥

ॐ ह्रीं सत्कारपुरस्कार मानापमान जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

मैं अध्यात्म निपुण श्रुत ज्ञाता, मैं रवि, जग जुगनूँ।
यों विज्ञान गर्व को तजकर, मैं जिन-दास बनूँ॥

प्रज्ञा जय हम करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 20॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा बुद्धिविकार जन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञान न हो तो अपमानों के, कर्कश वचन सहें।
किन्तु तपस्या भंग न करके, ज्ञानानंद चखें॥
करें विजय अज्ञान आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 21॥

ॐ ह्रीं अज्ञानजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मैं वैरागी त्यागी हूँ पर, चमत्कार नहिं हों।
अतः निरर्थक व्रत पालन हैं, ऐसे भाव न हों॥
विजय अदर्शन करें आप सम, ऐसी शक्ति दो।
नेमिप्रभु के चरण कमल में, अतः नमोस्तु हो॥ 22॥

ॐ ह्रीं अदर्शन मतमतान्तरजन्यपीड़ानिवारणार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(चार - भावना) (लय - माता तू दया....)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
प्रभु! अपने-परायों में, नित मैत्री भाव रहे।
नहिं वैर भाव पनपे, आपस में प्रेम रहे॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 23॥

ॐ ह्रीं मैत्री सुख शान्तिविकासनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गुणियों को देखें तो, अनुराग भक्ति उमड़े।
जिया पुलक-पुलक जाये, निज-आत्म प्रमोद बड़े॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 24॥

ॐ ह्रीं प्रमोदभक्ति अनुराग भावविकासनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो दीन-हीन दुखिया, हो दया-भाव उन पर।
उनका दुख मिट जावे, तो करुणा हो निज पर॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 25॥

ॐ ह्रीं कारुण्यदयाभावविकासनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो विनय नहीं करते, उनमें माध्यस्थ रहें।
नहिं पक्षपात होवे, निज आतम स्वस्थ रखें॥
यह पूर्ण भावना हो, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 26॥

ॐ ह्रीं माध्यस्थ रागद्वेषपक्षपातभावविनाशनार्थं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(चार-आराधना)

बहिरंग छहों कारण, दें सम्यग्दर्शन जो।
व्यवहार और निश्चय, दर्शन-आराधन हो॥
वह दोष रहित पायें, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 27॥

ॐ ह्रीं दर्शन आराधना प्रदाता श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रुत बारह अंगों का, जो सम्यग्ज्ञान रहा।
वह ज्ञानाराधन जो, तीर्थंकर कथित रहा॥
वह ज्ञान पिण्ड पायें, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 28॥

ॐ ह्रीं ज्ञान आराधना प्रदाता श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मुनि तेरह विध वाला, सम्यक्चारित्र धरें।
उन मुनि का आराधन, निज आत्म पवित्र करें॥
चारित्र धरें हम भी, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 29॥

ॐ ह्रीं चारित्र-आराधना-प्रदाता-श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो मूलगुणों के साथ, उत्तरगुण तप करते।
उन महा तपस्वी का, हम आराधन करते॥
हम कर्म हरें तप से, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥ 30॥

ॐ ह्रीं तप-आराधना-प्रदाता-श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

हम जल बन जाएँ तो, तुम निर्मलता कर दो।
हम चंदन बन जाएँ, तुम शीतलता भर दो॥
हम बनें अगर अक्षत, तुम अपना बना लेना।
हम पुष्प बनें तो तुम, हमको भी खिला देना॥
नैवेद्य बनें हम तो, दो आत्म स्वाद हमको।
जब दीप बनें हम तो, तुम ज्योति बनो चमको॥
यदि धूप बनें हम तो, तुम खुशबू बन महको।
जब फल बन जाएँ हम, दो चिदानन्द रस को॥
यह अर्घ्य चढ़ा के हम, इच्छाएँ व्यक्त करें।
प्रभु कृपा करो हम भी, प्रभु में अनुरक्त रहें॥
हम भी गिरिनार चढ़ें, बस ऐसी शक्ति दो।
हे! नेमिनाथ स्वामी, अब तुम्हें नमोस्तु हो॥

(दोहा)

आतम साधक सह रहे, परिषह अरु उपसर्ग।
नेमि प्रभु दो शक्तियाँ, करने कार्योत्सर्ग॥

ॐ ह्रीं समस्तविध उपसर्ग परिषहजन्यपीड़ानिवारणार्थं आत्मभावनाविकासक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

ऋषि मुनि की सेना रही, नायक प्रभु नेमीश।
कर्म युद्ध जीता जिन्हें, हम भी टेकें शीश॥

जिनके चरण सरोज में, भक्त भ्रमर का शोर।
हमें नेमिप्रभु ले चलो, गिरिनारी की ओर॥

(त्रिभंगी)

हे! नेमि जिनेशा, हे! परमेशा, हे! सर्वेशा, दया करो।
तुम जग के नायक, सब के पालक, आतम ज्ञायक, कृपा करो॥
तुम संकटहारी, अतिशयकारी, ब्रह्म-विहारी, स्वामी हो।
हे! सब-उपकारी, तुम्हें हमारी, बारी-बारी, नमामि हो॥ 1॥

जब जन्म लिए तो, स्वप्न दिए तो, पर्व हुए तो, सभी खुशी।
माँ-पिता खुशी, पर लोग खुशी, पर भक्त खुशी पर, आप दुखी॥
क्या आप विचारे? कर्म हमारे, भर्म हमारे, सुखनाशी।
तुम राज निवासी, बन संन्यासी, आत्म प्रकाशी, निजवासी॥ 2॥

तुम परिषह सहकर, निज में रहकर, पर को तजकर, पूज्य बने।
हम तुमको भजकर, प्रभु गुण गाकर, प्रभु में रमकर, धन्य बने॥
जब मंदिर आते, विघ्न सताते, संकट आते, हमको भी।
प्रभु! बहुत कष्ट क्यों, आप रुष्ट क्यों, किन्तु इष्ट हो, हमको भी॥ 3॥

उपसर्ग भले अब, कष्ट भले अब, भ्रष्ट भले अब, हो जाएँ।
पर धर्म न छूटे, भाग्य न फूटे, शपथ न टूटे, वर पाएँ॥
नित मैत्री होवे, प्रमोद होवे, करुणा होवे, क्रम-क्रम में।
माध्यस्थ सदा हों, व्यस्त सदा हों, मस्त सदा हों, आतम में॥ 4॥

छह कारण पाकर, लब्धि प्राप्त कर, सम्यग्दर्शन, निर्मल हो।
सुन के गुरु-वाणी, गुन प्रभु वाणी, चुन कल्याणी, मंजिल हो॥
चारित्र सँभाले, कर्म नशा लें, मोक्ष हि पालें, धर्मात्मा।
है यही कामना, भक्त भावना, करे साधना, हर आत्मा॥ 5॥

है जग का मेला, धर्म अकेला, प्रभु का चेला, धर न सके।
प्रभु अतः साथ दो, हाथ पकड़ लो, बाल भी बाँका, हो न सके॥

मत आप भुलाना, पास बुलाना, पाप छुड़ाना, ये इच्छा।
या तो खुद आओ, हमें बुलाओ, किन्तु दिलाओ, जिनदीक्षा॥ 6॥

हो आप दयालु, हम श्रद्धालु, हृदय हमारे, प्यार भरो।
ये भक्त सुदामा, के मुट्ठी भर, चावल तो, स्वीकार करो॥
तन-मन-धन अर्पण, भक्त समर्पण, 'सुव्रत' पर, उपकार करो।
कुछ दो न दो पर, वियोग न देना, अर्जी यह मंजूर करो॥ 7॥

(सोरठा)

दया धर्म का सार, बाकी सब विस्तार हैं।
जिसका कर शृंगार, नेमि गए भव पार हैं॥
आत्म दया का बंध, तत्त्वज्ञान भी दान दो।
नेमि प्रभु अरिहंत, तुम को सदा प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

॥ इति श्री नेमिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

नगर 'लिधौरा' है जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं लेख पूरा हुआ, नेमिनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, अप्रैल सत्रह तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : लेके पिछी कमण्डल....)

प्यारे जिनवर नेमिनाथ, तुम हो अपने चारों धाम।[2]
करके आरति जोड़े हाथ, तुमको बारम्बार प्रणाम॥[2]
तुमको बारम्बार.....।[2] प्यारे जिनवर .....।

1.

समुद्रविजय के राज दुलारे, शिवदेवी के लाल।
मुक्ति वधू अपनाने छोड़ा, शौर्यपुरी जग जाल॥[2]
दूल्हा तजे वधू बारात – तुमको बारम्बार प्रणाम....

2.

घर संसार वसाना क्या जब, सब जाता है छूट।
दिन के हों या स्वप्न रात के, सब जाते हैं टूट॥[2]
इससे बने विरागी आप – तुमको बारम्बार प्रणाम....

3.

बाल ब्रह्मचारी जा पहुँचे, नेमिनाथ गिरिनार।
संत बने तो धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकार॥[2]
हो गई मुक्तिवधू नतमाथ – तुमको बारम्बार प्रणाम....

4.

नाम आपका तारणहारा, साँसों की है डोर।
छोड़ न देना थाम हि लेना, चलो मोक्ष की ओर॥
'सुव्रत' की रख लो ये बात – तुमको बारम्बार प्रणाम....